International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 7 Issue 7 Ver. I || July. 2018 || PP. 97-99

नारी उत्कर्ष में मीडिया की भूमिका

सुषीला सांवरिया
सह आचार्य (इतिहास)
स्व. पण्डित नवल किशोर षर्मा राजकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय दौसा (राज.)

सन्दर्भ
डिजिटल इण्डिया के इस युग मे महिलाओं के प्रति यौन उत्पीड़न , हिंसा , बलात्कार , जैसी घटनाएं कम होने की बजाय बढ़ती जा रही हैं। विशेष रूप से कार्यस्थल पर महिलाओं के प्रति होने वाला उत्पीड़न एक बड़ी चुनौती है, जिसका सामाना कामकाजी महिलाओं को प्रायः करना पड़ता है। चुंकि आर्थिक स्वावलम्बन के लिए महिलाओं को घर से बाहर निकलना आवश्यक है, इसे रोका नहीं जा सकता । इण्डिया टुडे का कार्यस्थल पर सेक्स सर्वे कुछ बुनियादी सवाल उठाता हैं जिन पर समाजशास्त्रियों, मनौवैज्ञानिकों और व्यवहार वैज्ञानिकों के व्यवस्थित अध्ययन की जरूरत है। कुछ निश्चित शहरों में ऐसे मामले बढ़ रहे हैं जिनकी हम अनदेखी नहीं कर सकते । मसलन दिल्ली के 60 प्रतिशत प्रतिभागी ऐसे लोगों को जानते हैं जिनपर कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगे हैं । यह राष्ट्रीय आंकड़े से दोगुना है। पुणे मे 83 फीसदी लोग दफ्तर में सेक्स करते पकड़े गए लोगों को जानते हैं। कार्यस्थल पर सेक्स के मामले में जयपुर शहर शीर्ष पर है।

परिचय

21 वीं सदी सर्वाधिक महत्त्वर्पूण घटनाओं में एक है – संचार क्रांति। आज मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मीडिया की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हो गयी है। सूचना एवं प्रौद्योगिकी ज्ञान की प्रगति के कारण आज का मनुष्य सभी प्रकार के नवीन ज्ञान एवं सूचनाएं आसानी से प्राप्त कर सकता है। यही कारण है कि आज विश्व को एक भूमण्डलीय गाँव के रूप मे देखा जा रहा है। भारतीय समाज में, जहाँ नारी को पूज्य मानते हुए भी अबला का दर्जा दिया जाता रहा है, संचार क्रांति ने नारी के इस पहचान को परिवर्तित करने मे सशक्त भूमिका निभायी है। मीडिया ने महिलाओं को जागरूक बनाने के साथ–साथ मानसिक रूप से सशक्त बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है। महिलाओं को प्रशिक्षित करने मे दूरदर्शन, आकाशवाणी, इन्टरनेट ने अपनी अग्रणी भूमिका निभायी है। प्रशिक्षित होकर महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक ही नहीं हो रहीं हैं वरन् आर्थिक रूप से स्वाबलम्वी होकर अपने दायित्वों का भी निर्वहन कर रहीं हैं।

संचार प्रौद्योगिकी के माध्यम से महिलाओं को देश–विदेश की गातिविधियों एवं महिला विकास कार्यक्रमों की जानकारी आसानी से हो जाती है। इससे महिलाओं में न केवल जागरूकता आयी है, वरन् वे प्रत्येक क्षेत्र में अपना स्थान बनाने में सफल हो रहीं हैं। शिक्षा के साथ साथ आज महिलाएं खेल – कूद, नृत्य संगीत, विज्ञान, पत्रकारिता , बैंकिंग, इन्जीनियरिंग तथा सुरक्षा जगत में तेजी से आगे बढ़ रहीं हैं। यह संचार क्रांति की ही देन है कि आज महिलाएं उन क्षेत्रों में भी अपना वर्चस्व बनाने लगी हैं जिनमें कभी पुरूष अपना एकाधिकार मानते थे। सार्वजानिक एंव पारिवारिक जीवन में तालमेल बिठाकर चलना भी एक चुनौती होती है, जिसमें आज की महिला समन्वय बैठा लेती है। यह मीडिया की सकियता से ही सम्भव हो पाया है, जो इसका एक सकारात्मक पहलू है।[1]

एक समय था जब भारत में महिलाओं को जटिल बौद्धिक कार्यों के लिए अनुपयुक्त माना जाता था किन्तु आज महिलाएं बौद्धिक क्षमता वाले कार्यों में पुरूषों के बराबर ही नहीं, कई मायने में आगे भी निकल चुकी हैं। आज कार्पोरेट जगत के शीर्ष पर चन्दा कोचर, शिखा शर्मा, इन्दिरा नूई, नैनालाल किदवई जैसी भारतीय महिलाओं के नाम अंकित हो चुके हैं। विज्ञान , खेल , राजनीति, प्रशासन एवं समाज सेवा के क्षेत्र में भी भारतीय , महिलाओं ने वैश्विक स्तर पर अपनी पहचान बनायी है। यह मीडिया एवं तकनीकी क्रांति की ही देन है कि उपयोगी सूचनाओं एवं विचारों का आदान – प्रदान आसानी से हो जाता है जिससे महिलाएं उन व्यक्तियों एवं संस्थाओ से सम्पर्क स्थापित कर लेती हैं, जो उनकी समस्याओं का समाधान कर सकते हैं। इसमे कोई सन्देह नहीं कि मीडिया ने महिलाओं को शिक्षा एवं रोजगार के असीमित अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें सशक्त बनाया हैं। संचार क्रांति का यह प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों मे भी परिलक्षित हो रहा है। इस प्रकार देखा जाए तो महिलाओं की इच्छा शक्ति कठोर परिश्रम और लगनशीलता ही है कि आज शहरी महिलाओं के साथ – साथ ग्रामीण महिलांए भी अपने पैरों पर खड़ी होकर जिम्मेदारियों का सफलापूर्वक निर्वहन कर रही हैं तथा घर की रसोई से लेकर देश, प्रदेश , समाज के सतत विकास मे हाथ बंटा रहीं हैं।[2] इस सन्दर्भ में केरल रूरल साफ्ट एंव रूरल बाजार मॉडल की उपलब्धियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। रूरल बाजार ई–शॉप है जिसके माध्यम से ग्रामीण महिलाओं के हस्तशिल्प उत्पादनों का प्रदर्शन किया जाता है , जो इन्हें स्वालम्बी बनाने की दिशा में एक सार्थक कदम है। यद्यपि सूचना प्रौद्योगिकी के प्रारम्भिक दौर में भारत में अन्य क्षेत्रों की तरह इस क्षेत्र में भी पुरूषों का वर्चस्व बना रहा , परन्तु धीरे–धीरे महिलाओं ने इसका लाभ उठाना शुरू किया । बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के पारू प्रखण्ड की ग्रामीण लड़कियों ने सामुदायिक चैनल "अप्पन समाचार" (आल वुमेन न्यूज चैनल) चलाकर इस मिथक को तोड़ दिया है कि बड़ी पूंजी व सेटअप के बगैर मीडिया की बातें सोची नहीं जा सकती गाँव की लगभग डेढ़ दर्जन लड़कियाँ पैसे के

लिए नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव के लिए मेहनत कर रहीं हैं। अप्पन समाचार का कार्यालय जिले के सुदूर पश्चिमी दियारा इलाके की नारायणी नदी के किनारे अवस्थित है। यही वही गाँव है जहाँ अधिकारी भी जाने से कतराते हैं। इस इलाके मे वर्षों से अपराधियों का वर्चस्व रहा है। आज भी इस गाँव में दैनिक अखबार को पहुँचने मे शाम हो जाती है। गिने चुने दो चार नेताओं व जागरूक लोगों के पास बहुत मुश्किल से पहुँचता है। आस पास के दर्जनों गाँव अंधविश्वास व सामाजिक बुराइयों में जकडें है। ऐसे में एक नई रोशनी फैलाने के मकसद से सामाजिक कार्यकर्ता व पत्रकार संतोष सारंग ने अप्पन समाचार की परिकल्पना को मूर्त रूप दिया । उन्होंने अपने कुछ साथियों की मदद से डेढ़ दर्जन देहाती लड़कियों को कैमरे व खबरों की बारीकियों से अवगत कराकर घर की देहरी से बाहर निकाला । यह चैनल केवल समस्याओं एवं खबरों को इकट्ठा नहीं करता बल्कि महिला सशक्तिकरण की दिशा में भी ठोस पहल करता है।[3] विकसित देशों द्वारा भारत में खोले जा रहे कॉल सेण्टर तथा इण्टरनेट प्रौद्योगिकी के आगमन से भारतीय महिलाओं में रोजगार सम्भावनाएं , दक्षता, आत्मविश्वास एवं समाज में प्रभाव बढ़ा है। क्योंकि महिलाएं पुरूषों की अपेक्षा इण्टरनेट कौशल का बेहतर उपयोग करती हैं। मारहर मार्टिन ने 1998 मे ही कहा था कि इण्टरनेट के शुरूआती दौर में ही उसपर पुरूषों का प्रभुत्व रहा परन्तु हाल के वर्ष मे महिलाएं इस क्षेत्र में आगे आयी हैं।, यही कारण है कि विश्व की सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र की एक प्रमुख कम्पनी आई0टी0एम0 ने भारत में इण्डिया साफ्टवेयर लैब स्थापित करने के लिए कल्पना मार्ग बन्धु को नियुक्त किया । महिलाएं वर्तमान मे समाज सुधार , शासन संचालन, सैन्य व्यवस्था,रेलयान, विभाग चालन इत्यादि सभी क्षेत्रों मे स्वकर्त्तव्यों का निर्वहन कर रही है।[4]

भारतीय महिलाओं, विषेशकर ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं को जागरूक बनाने में दूरदर्शन एंव रेडियों की भूमिका अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रही है। महिला कल्याण के लिए दूरदर्शन द्वारा एक विशेष कार्यक्रम कक्ष बनाया गया है। जिसे लोक सेवा प्रसारण के लिए लिंग आधारित कार्यक्रम बनाने का दायित्व सौंपा गया है। पंचायती क्षेत्र में महिलाओं को राजनीतिक रूप से सशक्त तथा आत्म निर्भर बनाने में रेडियों ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी है। रेडियों द्वारा ही गैर सरकारी संगठन प्रिया और उनकी सहयोगी संस्थाओ ने स्थानीय स्वशासन मे महिला सशक्तिकरण के लिए कार्यक्रम शुरू किया है। इसके अतिरिक्त विभिन्न राज्यों में पंचायती क्षेत्र मे महिलाओं की जागरूकता के लिए कार्यक्रम चलाए जा रहे है। केरल द्वारा तैयार कार्यक्रम " स्वंयभरणम्" (स्वशासन) में बातचीत, उड़ीसा का कार्यक्रम " अमाहती अमा शासनजेरी " (हमारे हाथो मे शासन की शक्ति), गुजरात द्वारा संचालित उन्नति " गामदा में हावकर " (गॉव की धड़कन), नामक रेडियो कार्यक्रम बनाया गया है। भारत मे 73वें एवं 74वें संविधान संशोधन द्वारा ग्राम सभा से लेकर नगर पालिका परिषदों में महिलाओं के लिए आरक्षण की व्यवस्था करके राजनीति में उन्हें आगे बढ़ने का अवसर दिया गया है । प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने महिला सरपंचो को उनके बेहतर काम के लिए बधाई देते हुए उनके पतियो को काम मे हस्तक्षेप न करने की सलाह दी है। प्रधानमंत्री के इस बयान से स्पष्ट है कि देश भर में महिला सरपंच जो काम कर रही हैं उसे पहचान मिल रही है। किन्तु आज भी उन्हें काम करने की पूरी आजादी नहीं मिली है। आरक्षण के माध्यम से महिलाओं ने सत्ता हासिल की है लेकिन पुरूष अब भी खुद को सत्ता का हकदार मानकर उसे नियंत्रित करने मे कोई कसर नहीं छोड़ता । अब मध्यप्रदेश में पंचायतो के काम काज मे महिला सरपंचों के पति के शामिल होने पर पाबंदी लगा दी है। इसी प्रकार राजस्थान में आठवीं तक पढ़े होने की पात्रता को अनिवार्य करके ऐसा रास्ता खोला है जहाँ, मजबूरन ही सही राजनीति की चाह रखने वाले परिवार स्त्रियों को शिक्षित करेंगें। यूँ तो " द हंगर प्रोजेक्ट " नामक संस्था महिला पंचायत प्रतिनिधियों मे नेतृत्व क्षमता के विकास के लिए विशेष कार्यक्रम संचालित करती है, परन्तु इसकी पहुँच सम्पूर्ण भारत मे नहीं है। इसलिए हर राज्यों में ऐसे संस्थानो की आवश्यकता है, जो उनके अधिकारों और कर्त्तव्यों की जानकारी के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए।[5] भारत में कुछ सामाजिक कुप्रथाएं आज भी महिला उत्थान में बाधक है और सांचर क्रांति के इस युग मे भी अशिक्षा के कारण महिलाओं को उनका शिकार होना पड़ता है। कर्नाटक के बेलगाँव जिले की सितवा जोद्दती का जीवन इसका प्रमाण है, कि आज भी भारत में कुछ क्षेत्र ऐसे है जहाँ संचार क्रांति की रोशनी पहुँचनी बाकी है। सात वर्ष की उम्र में ही सितवा को उनकी इच्छा के विरूद्ध देवदासी बना दिया गया । 90 के दशक मे जब बेलगाँव में कुछ पूर्व देवादासियाँ इस कुप्रथा के खिलाफ काम कर रही थीं तब सितवा को उनसे मिलने का मौका मिला और पहली बार उन्हें पता चला कि किसी महिला को देवदासी बनाना कानून के खिलाफ हैं । उन्होंने यह तय कर लिया कि अब किसी बेटी को देवदासी नहीं बनने देंगी । उन्होंने महिला अभिवृद्धि मट्टू संरक्षण संस्था बनाई। वर्ष 2012 मे वह इस संगठन की सीईओ चुनी गईं। उन्होंने यौन उत्पीड़न के शिकार महिलाओं और बच्चों के लिए संघर्ष किया । महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने की मुहिम शुरू की । उनके काम को पूरे राज्य मे पहचान मिली। केन्द्र सरकार ने इस साल उन्हें पद्म पुरस्कार से सम्मानित किया है।[6]

इसमें सन्देह नहीं कि म.समंतदपदह ए म.हवअमतदंबमए म.कनबंजपवदेए म.पिदंदबमए म.उंतांजपदहए ठण्च्ण्ट ;ठनेपदमे च्तवबमे व्नजेवनतपदह द्धए ज्ञच्ःज्ञदवूसमकहम च्तवबमे व्नजेवनबपदहद्ध इत्यादि नयी तकनीकी ने पुरूषों की भांति महिलाओं को भी रोजगार एवं शिक्षा के असीमित अवसर उपलब्ध कराकर उन्हें सशक्त बनाया है। सम्प्रदाय और समूह अनुसार हो सकते हैं। लेकिन नेट महिलाओं को उन लोगों से सम्पर्क स्थापित करने में मदद करता है जो उनकी समस्या का समाधान कर सकते है, सूचनाएं दे सकते हैं और समर्थन कर सकते हैं।[7] डिजिटल क्रांति के इस युग में महिलाओं की उन्नति के लिए कई कार्यक्रम भी चलाए जा रहे है। सहस्त्राब्दी विकास लक्ष्य (एम0डी0जी0) 2015 का लक्ष्य तीन लिंग भेद की समाप्ति के साथ ही महिला सशक्तिकरण को समर्पित था वहीं "सतत विकास लक्ष्य " में महिलाओं से जुड़े मुद्दे को व्यापक फलक पर देखा गया है। महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के साथ अन्य तकनीकों के उपयोग को बढ़ावा देने पर बल दिया जा रहा है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2017 के मौंके पर प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने कहा मेरी सरकार ने महिलाओं के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने के लिए

कई कदम उठाए हैं।[8] ग्रामीण महिलाओं के उत्थान के लिए सरकार के द्वारा स्किल इण्डिया योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, स्टार्टअप इण्डिया , तथा दीन दयाल अन्त्योदय राष्ट्रीय ग्रामीण जीविकोपार्जन मिशन जैसे व्यापक कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन तमाम प्रयत्नों के बावजूद महिला जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा अवसरों की उपलब्धता से वंचित है, हाशिए पर है। महिलाएं निर्णय प्रक्रिया और भागीदारी में सबसे पीछे हैं।[9]

यह सत्य हैं कि मीडिया के कारण भारतीय महिलाओं की स्थिति में महत्तपूर्ण परिवर्तन आए हैं किन्तु यह परिवर्तन सतही एवं अधूरा है। साथ ही संचार क्रांति के इस युग में स्त्रियों के लिए नयी चुनौतियाँ भी उपस्थित हो रहीं हैं। इलेक्ट्रानिक मीडिया ने आज भारतीय महिला की शालीन पारम्परिक आदर्श छवि को बदलकर प्रदर्शन एवं उपभोग की वस्तु बना दिया है। शेविंग क्रीम से लेकर कोल्ड ड्रिंक तक के विज्ञापन में महिलाआं की उपस्थिति अनिवार्य होती है। आज ब्युटीफुल लेग्स, ब्युटीफुल आईस, ब्युटीफुल, हेयर आदि के नाम से महिलाओं के अंग अंग पर कान्टेस्ट प्रारम्भ कर दिए गए हैं जिनमें महिलाएं बढ़ चढ़कर हिस्सा ले रही हैं। मीडिया ने किशोरियों एवं युवतियों को शारीरिक सौन्दर्य प्रसाधन एवं परिधानों की ऐसी अंधी दुनिया में प्रवेश करा दिया है जहाँ वे इस चमक दमक को ही अपनी उन्नति का प्रमाण मानने लगी हैं। डिजिटल इण्डिया के इस युग मे महिलाओं के प्रति यौन उत्पीड़न , हिंसा , बलात्कार , जैसी घटनाएं कम होने की बजाय बढ़ती जा रही हैं। विशेष रूप से कार्यस्थल पर महिलाओं के प्रति होने वाला उत्पीड़न एक बड़ी चुनौती है, जिसका सामाना कामकाजी महिलाओं को प्रायः करना पड़ता है। चुंकि आर्थिक स्वावलम्बन के लिए महिलाओं को घर से बाहर निकलना आवश्यक है, इसे रोका नहीं जा सकता । इण्डिया टुडे का कार्यस्थल पर सेक्स सर्वे कुछ बुनियादी सवाल उठाता हैं जिन पर समाजशास्त्रियों, मनौवैज्ञानिकों और व्यवहार वैज्ञानिकों के व्यवस्थित अध्ययन की जरूरत है। कुछ निश्चित शहरों में ऐसे मामले बढ़ रहे हैं जिनकी हम अनदेखी नहीं कर सकते । मसलन दिल्ली के 60 प्रतिशत प्रतिभागी ऐसे लोगों को जानते हैं जिनपर कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के आरोप लगे हैं । यह राष्ट्रीय आंकड़े से दोगुना है। पुणे मे 83 फीसदी लोग दफ्तर में सेक्स करते पकड़े गए लोगों को जानते हैं। कार्यस्थल पर सेक्स के मामले में जयपुर शहर शीर्ष पर है।[10] यह आर्थिक आजादी, खुलेपन एवं संचार क्रांति का नकारात्मक प्रभाव है जो महिला उत्थान में एक बड़ी बाधा है। यह एक चुनौती है जिसका सामना भारतीय महिलाओं को करना है यदि भारतीय महिलाएँ इन चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो पायीं और सूचना एंव तकनीकी ज्ञान का सकारात्मक उपयोग किया गया तो निश्चित रूप से वे नये कीर्तिमान स्थापित करेंगी । बहरहाल जिस तेजी से भौतिकता एवं प्रौद्योगिकी के पक्ष में महिला चेतना का विस्तार हो रहा है उस गति से महिलाएं अपने कानून एवं अधिकार के प्रति सजग नहीं हो पायीं हैं। इस दिशा मे संचार माध्यमों की ईमानदार प्रतिबद्धता निश्चित ही महिला सशक्तिकरण के इतिहास में स्वार्णिम अध्याय जोड़ सकती है।[11] इस प्रकार सूचना प्रौद्योगिकी महिलाओं के पूर्ण विकास के लिए आर्थिक व सामाजिक नीतियों के प्रचार प्रसार के माध्यम से एक ऐसा वातावरण तैयार कर रही है जिससे कि वे अपनी पूर्ण क्षमताओं को पहचान सकें तथा सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, प्रशासनिक, सभी क्षेत्रों में अपनी मूलभूत स्वंतन्त्रताओं एवं मानवाधिकारों का , जो वैधानिक शाक्तियों से उन्हें मिली हैं, वे इसके बारे में जानकारी प्राप्त कर इसका उपभोग कर सकें। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 2015 में अंगीकृत सम्पोषणीय विकास ऐजेण्डा मे भी महिलाओं के सशाक्तिकरण को बढ़ाने के लिए सक्षम प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उपयोग को बढ़ाने पर बल दिया जा रहा है।[12]

सन्दर्भ :–

1– कुरूक्षत्रे, अक्टूबर 2013, पृ0–56
2– कुरूक्षत्रे, अक्टूबर 2013, पृ0–58
3– कुरूक्षत्रे, अक्टूबर 2013, पृ0–33,34
4– प्रतियोगिता दर्पण मई 2008, पृ0 1795?
5– हिन्दुस्तान 3 अप्रैल 2015, पृ0–12
6– हिन्दुस्तान 1 अप्रैल 2018, पृ0–14
7– विवके एस0 राज, समकाली भारतीय मुद्दे 2010, पृ0–132
8– कुरूक्षेत्र सितम्बर 2017,पृ044–45
9– योजना, अगस्त 2015,पृ0–57
10– इण्डिया टुडे, मार्च 2018, पृ0–50
11– कुरूक्षेत्र, अक्टूबर 2013, पृ0–59
12– प्रतियोगिता दर्पण अप्रैल, 2017, पृ0–77